आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 06 | उदयपुर सोमवार 01 अप्रेल 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

खेलण दो गणगौर भंवर म्हाने पूजण दो गणगौर

ऋतुराज बसन्त के आगमन के पश्चात त्यौहारों का प्रायः तांता सा लग जाता है। जन-जीवन में आनंद, उत्साह एवं उल्लास उमड़ पड़ता है।

रंगीले चंग की चलत, गैर की धन्त्यो पतड़, डांडिया और गींदड़ के भाई-भाई रे गैर्‌या, औरतों के कोई हाथ कांगण माथे बोर ए रायां की होली, बालिकाओं का लूर तथा फागण रा दन चार होली वेगी आवजे, रंग की पिचकारियों, गुलाल की गुलालों, पटाखों की पटपट तथा फूलझड़ियों की सर-सर सूं के साथ फाल्गुन शुक्ला तृतीया को सौभाग्यकांक्षिणियों की सुभाग, सुन्दरियों का सिन्दूर, साधिकाओं की साधना, सतियों के सतीत्व की प्रतीक, छोटी बालिकाओं तथा कुंवारी कन्याओं की पूजा, कुमारिकाओं की श्रेष्ठ पति प्राप्ति की आशा और सधवाओं के पति चिरायु की विश्वास बन कर गणगौर आती है जिसे राजस्थानी और मालवी गणगौरें बड़े उत्साह, उमंग और निष्ठा के साथ मर्यादापूर्वक मनाती हैं। पूजा-पाठ करती हैं और नृत्य-गीतों के साथ अपना मनोरंजन करती हैं।

होलिका दहन के आठवें दिन शीतला पूजन के बाद टीलों के बालू, मिट्‌टी तथा कुम्भकार के वहां से चिकनी मिट्‌टी लाकर ईसर, कानी, मालण आदि की प्रतिमाएं बनाई जाती हैं।

जवारों के रूप में जौ बो दिये जाते हैं तथा चैत्र बदी एकम से चैत्र शुक्ला तृतीया तक गौर की पूजा की जाती है। इस अवसर पर राजस्थान में जगह-जगह एकम से बीज तक मेले भी लगते हैं।

कन्याएं ईसर (महादेव) और गौरी (पार्वती) से मनवान्छित वर प्राप्त करने की कामना स्वरूप प्रातः उठते ही अपनी-अपनी टोलियां बना कर वन में जाती हैं और दुर्बा लोठे में फूल सजाकर गौरी-पूजा तथा वर-कामना के विविध गीत गाती हुई लौटती हैं और संध्या को महिलाएं घूमर नृत्य के साथ कई तरह के गीत गाती हैं। यथा-

(1) काली चूंदड़ ऊपर बालमा बोत राजी
(2) काले रंग चूंदड़ी लादे रे बालमवा
(3) बदीला म्हारे गजरो लादो सा
(4) लाईदो रसिया जोधपुरी
(5) म्हारी घूमर छै नखराली ए मां
(6) भरलावो पाणी सागर रो
(7) रगड़-रगड़ पग धोवती ओ रसिया

हर्ष, आनंद, उल्लास, विनोद तथा प्रेम के रूप में यह त्यौहार मनाती हैं। अपनी सखी-सहेलियों को चाहे सवा मण रोली भी क्यों न बांटनी पड़े वह तो ईसर जैसे वर को ही अपना भरतार बनायेगी, जैसी बात भी गीतों के रूप में स्वतः कंठों से निकल पड़ती है-

हां ओ बाप जी
इसर वर ने भलाई वरां
सवामण रोली
सैया ने बांटस्यां।

इस त्यौहार पर चूड़ा और चूनड़ी पहनना अत्यन्त आवश्यक समझा जाता है। सधवा स्त्रियां-

यां ही रहो उगन्ता सूरज यांही रहो जी
थाने रस्ते में होसी गणगौर
म्हारा हंजा मारू यां ही रहो जी।

कहकर अपने प्रियतम से उनके साथ रहने की चाह करती हैं और गौर का विंदोरा निकालती हैं।

गणगौर के दिन संध्या को औरतें अच्छे वस्त्राभूषणों से सज-धज कर गीत गाती हुई समूह रूप में रावले (महल) में रानीजी के दर्शन करने जाती हैं। रानीजी के कीमती वस्त्राभूषण देख कर जब वे अपने घर लौटती हैं तो अपने प्रियतम से उसी अनुरूप वस्त्र एवं आभूषण लाने की मांग बात और बोली बिना, गीत रूप में कितनी स्वाभाविक ढंग से करती हैं-

'लाईदो रसिया जोधपुरी' में माथा ने मेमद, रखड़ी रे रतन, काना रे झालज, जूटणा रे झोल, मुखड़ा रे बेसर, टीलड़ी रे जरद, हिवड़ा रे हांस, तमण्या रे पाट, बायां रे चूड़लो, अंगिया रे झरद, हाथां रे हथफूल, गजरा रे मजरा, कड़ूयां रे कसूमल, केसर्‌या रे कोर, पगल्या रे पायल, घूमरा रे घमच, अंगोठा रे अणवट तथा बिछिया रे डांडी दिलाने की विनती करती है।

गणगौर के दिन प्रियतमा अपने प्रियतम से कह बैठती है-

आज तो रंगीली गणगौर हो
मेवाड़ा राजा
आज तो रसीली गणगौर हो
चित्तौड़ा राजा,
आज तो.....
कसूमल पाग, केसर बीन बागा,
तुर्रा री छवि न्यारी
हो मेवाड़ा राजा, हो चित्तौड़ा राजा
आज तो.....

इसलिए मुझे भी गणगौर खेलने जाने की आज्ञा दीजिये कारण कि मेरी सभी सहेलियां बाहर खड़ी मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं।

खेलण दो गणगौर भंवर म्हाने
खेलण दो गणगौर
होजी म्हारे गणगौरी रा दन च्यार
होजी मारू खेलण दो गणगौर
होजी म्हारी सगीय नणद रा वीर
गाढ़ा मारू खेलण दो गणगौर
होजी म्हाने गणगौर्‌यां रो चाव
साजन म्हाने पूजण दो गणगौर।

अपनी सखी-सहेलियों के साथ ओढ़-पहिन कर तैयार बनी बैठी बादल महल, हरिया बाग और मोती महल में गणगौर रमने जाने के लिए प्रियतम की आज्ञा की इंतजार कर ही रही थी और प्रियतम आज्ञा का इशारा कर बाहर चला गया।

इसलिए वह घड़ी, हर घड़ी, पल-प्रतिपल अपने घर-आंगन में ऊपर-नीचे चढ़ती प्राण प्यारे की बाट जोहती है। प्रियतम के नहीं आने पर वह इस आशा से गाना प्रारंभ कर देती है कि जहां भी उसके प्रियतम होंगे, उसका गीत सुनकर घर चले आयेंगे और उसे गणगौर खेलने जाने की स्वीकृति प्रदान करेंगे।

गणगौर के अवसर पर स्त्रियां घूमर नृत्य करती हैं। यह घूमर उदयपुर तथा बूंदी की बड़ी कलापूर्ण होती है। घूमर नृत्य में कई गीत प्रचलित हैं जिनमें से कुछ प्रतिनिधि प्रसिद्ध गीतों के बोल इस प्रकार हैं-

(1)
लालर लेदो रे नोखीला म्हारो जीव तरसे
लालर लेदो रे।
रखड़ी बांधूं तो म्हारे कालो डोरो आठी को
बिंदली बिना म्हारो जीव तरसे
लालर लेदो रे।
लेरियो ओढ़ूं तो म्हारो मन नहीं भावे
सालूड़ा बिना म्हारो जीव तरसे
लालर लेदो रे.....

(2)
सागर पाणी कैसे लाऊंसा
नजर लग जाय।
म्हारी पातली कमर
ढोला लुल़-लुल़ जाय।

(3)
म्हारी घूमर छै नखराली ए मां
गौरी घूमर रमवा म्हैं जास्यूं
म्हारी रणक झणक पायल बाजे ए मां
म्हारे आलीजी री बोली मोत्यां तोली ए मां

- प्रस्तुति : डॉ. तुक्तक भानावत

रतन जतन कर राखजो ए मांय

चैत्र मास में होली के बाद कहीं सप्तमी तो कहीं अष्ठमी पर शीतला माता का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन ठण्डा खाया जाता है। माता शीतला चेचक की देवी मानी जाती है। अत: औरतें एक रात पहले माता सम्बन्धी नाना गीत गाती हैं जिनमें माता का नखशिख वर्णन, उसका गुण गौरव, उसकी महिमा तथा बाल-बच्चों को सुन्दर स्वस्थ रखने की भावना व्यक्त की जाती है।

इसी रात्रि को दूसरे दिन का खाना बना लिया जाता है जिसमें ढोकले, ओलिया, चावल, पूड़ियां तथा अमचूर, केल, सांगरी, वरकणे व कुरमुदे की सब्जी बनाई जाती है।

प्रात: होने पर माता के लिए पूजापे की थाल सजाई जाती है जिसमें कुंकुम्, कूलर, मेंहदी, सुपारी, दही, ओलिया, पतासी, ढोकला, चावल, एक मुट्ठी धान, आटे के बने दीपक रखे रहते हैं। पूजा थाल लेकर नये वस्त्राभूषणों से सज्जित हो औरतें माताजी के थानक पर जाती हैं जहां माताजी के रूप में चेचकनुमे धांधले पत्थर पूजे जाते हैं। यहीं माताजी की पूजा के बाद छोटी-छोटी कंकरियां एकत्र कर पथवारी के रूप में पूजी जाती है। इस समय जो गीत गाये जाते उनमें पारिवारिक ऋद्धि-समृद्धि सूचक भावनाएं देखने को मिलती हैं।

कहीं-कहीं शीतला के व्रत भी किये जाते हैं। व्रत करने के लिए औरतें दीवार पर सिन्दूर कुंकुम् का थापा बनाती हैं। थापों में कहीं गोलाई में माताजी के हाथ, सातिया, त्रिशूल एवं मेंहदी की सात बिन्दियां दी हुई होती हैं तो कहीं माता के वाहन गधे द्वारा गाड़ी खींचने का दृश्य बनाया जाता है। ये थापे बड़े कलात्मक, आकर्षक और धार्मिक अभिव्यक्ति के पोषक होते हैं। राजस्थान में इस त्यौहार पर स्थान-स्थान पर मेलों का भी आयोजन होता है जिनमें ग्रामीण लोग बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। लोकोत्सव के रूप में यह राजस्थान के प्रमुख पर्वों में से एक है।

- अनिशा मेहता

दशामाता व्रत-कथा-अनुष्ठान

होली के दूसरे दिन से ही दस दिन का अगता शुरू हो जाता है। इन दिनों महिलाएं कातने, सींवने, खाण्डने, पीसने सम्बन्धी कोई कार्य नहीं करती हैं। दस ही दिन पूर्ण संयम से व्यतीत करती हैं। एक समय भोजन करती हैं और दशादेवी के व्रत के साथ-साथ प्रतिदिन दशामाता की दस कहानियां सुनती हैं। गांवों और शहरों में जगह-जगह दशामाता का स्थान होता है। इस स्थल पर पीपल वृक्ष अवश्य होता है। दशामाता गृह-दशा ठीक बनाये रखने वाली देवी है। कहा भी है-

पीपल पूजे पनोती,
भर-भर मोत्यां थाळ।।
दुख दोरम ने रंडापो,
तीनी काने टाळ।।

वर्ष भर गृहदशा ठीक बनी रहे। परिवार में सुख, शान्ति और समृद्धि बनी रहे। महिलाएं सौभाग्यवती रहें। इसी दृष्टि से दशामाता की कहानियां सुनी जाती हैं। कहानी सुनने वाली सभी अपने गले में दशादेवी की प्रतीक हल्दीरंगी कच्चे धागे की बनी डोरी धारण करती हैं जिसे 'वेळ' कहते हैं।

यह वेळ पूरे वर्ष बनी रहती है। इसके टूटने, खराब होने या सूतक लगने पर नई वेळ धारण करना जरूरी होता है शादी के पश्चात हर महिला अपने सुसराल में दशामाता की वेळ धारण करती है। कहानी कहने वाली ऐसी महिलाएं हर जगह मिल जायेंगे जिन्हें दशामाता की कहानियां याद रहती हैं। ऐसी सौ-सौ से भी अधिक कहानियां कहने वाली मिल जायेंगी। कहीं-कहीं महिलाओं के साथ पुरुष भी दशा की वेळ धारण करते हैं। व्रत कर कहानियां सुनते हैं। अन्तिम दिन नल-दमयंती की कहानी कहना-सुनना जरूरी है। यह सबसे बड़ी कहानी है।

प्रत्येक कहानी में अच्छे-बुरे कर्म करते अंतत: बुरे कर्म वाले को कष्ट भोगने होते हैं। प्रार्थना की जाती है कि अच्छे कार्य का कर्म-फल जिसे मिला वैसा सभी को मिले।

डॉ. कविता मेहता ने दशामाता व्रत-कथाओं पर महत्वपूर्ण शोध-प्रबन्ध लिख पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने 150 कहानियां एकत्र कीं। उनमें से 50 का चयन कर अध्ययन को पुख्ता किया। उनका ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

-डॉ. शकुंतला पंवार

सर्वतोमुखी सर्जक डॉ. भटनागर

-गोपालप्रसाद मुद्गल-

डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर की यादों में एक बिजली सी कौंधती है। आये दिन एक तस्वीर खड़ी हो जाती है। तप-तपकर कुन्दन हुई देह। न स्थूल न क्षीण। न लम्बी न गट्टी। लगता मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली एक इकाई हो। हां, पांवों में बिजली। तीर की तरह जाना और पवन की गति से आना। चिन्तन भी मुद्रा में, अपने में मग्न। आखों में पूरे परिवेश को पीने की चमक। पूरे पर्यावरण को अपने में समा लेने की जिज्ञासा।

उनका रहन-सहन सामान्य पर कहन असामान्य। अन्तरमुखी कम, बहिर्मुखी ज्यादा। वह बहिर्मुखता उनकी निश्छल हंसी से अपने-आप फूट पड़ती है। उनकी हंसी की खिलखिलाहट में न बनावट है न मिलावट। न सजावट है न दिखावट। ऐसे हैं एक समर्थ लेखक डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर।

हम दोनों में आकाश पाताल का अन्तर। राजा भोज और गंगू तेली जैसा। भटनागरजी का विशद अध्ययन, चिन्तन और मनन सिर के ऊपर चढ़कर बोलता। उनके पास का सान्निध्य ऐसा लगता मानो मरुथल में लू के थपेड़ों की मार से थके पथिक को सघन पेड़ की छाया मिल गई हो। भयंकर आंधी और तूफानों को हमने उन्हें झेलते देखा है।

असामान्य परिस्थिति में सामान्य बने रहना बड़ी टेढ़ी खीर है किन्तु भटनागरजी का दर्शन जिस नींव पर टिका था वह पक्की थी, फौलाद जैसी। साहित्य साधना के लिए दूसरे के तनावों को अपने पाले में लेना उन्होंने नहीं सीखा। हम अक्सर कहा करते थे कि भटनागरजी किस माटी के बने हैं कि लोगों की सहनीय और असहनीय सबको सहते रहते हैं। आज उसी सहनशीलता की देन है कि उन्होंने सृजन का पहाड़ खड़ा कर दिया है। जहर पीने का ही तो प्रतिफल है कि नीले घोड़े के सवार (उपन्यास) से लेकर मूक नायक तक के असरदार ग्रंथ उनका नाम देश और विदेश में रोशन कर रहे हैं। उनके विभिन्न गन्थों पर शोध-कार्य हो रहे हैं।

उनके उपन्यास, नाटक, कहानी आदि हायर सैकण्डरी, बी.ए., एम. ए. आदि के पाठ्यक्रम में लगे हैं। उनके उपन्यासों का अंग्रेजी, फ्रेंच, कन्नड़, मराठी, उड़िया, गुजराती आदि भाषाओं में निरन्तर अनुवाद हो रहा है। उनके 200 ग्रन्थों की सूची को देखते ही अच्छे-अच्छे साहित्यकार आश्चर्य करने लगते हैं।

जब वे जल महलों की नगरी डीग में हिन्दी के व्याख्याता थे, एकबार बच्चों को साहित्यिक यात्रा पर ले गए। दस-बीस बच्चों को दिल्ली जैसी जगह में ले जाना खतरे से खाली नहीं था किन्तु भटनागरजी के हौंसले बुलन्द थे। वे युवा पीढ़ी को पंख लगाना चाहते थे। शिक्षार्थियों को लेकर वे दिल्ली गए। लालकिला, कुतुबमीनार, चांदनी चौक, शीशगज, गुरूद्वारा आदि दिखाया ही नहीं उनके पीछे का इतिहास भी खोलकर रखा।

साहित्यकारों में जैनेन्द्रकुमार से मिलवाकर यात्रा को अधिक अविस्मरणीय बना दिया। मेरे जीवन में दो साहित्यकारों का विशेष योगदान रहा है। एक थे डॉ. रांगेय राघव जिन्होंने मुझे कंचन करत खरै उपन्यास लिखने के लिए विशेष प्रेरणा दी। दूसरे हैं श्री भटनागर साहब जिन्होंने मुझे प्रोत्साहन ही नहीं दिया अपितु मेरे ब्रजभाषा के रूपकों का हिन्दी अनुवाद कर छपवाया। साहित्य के क्षेत्र में भटनागरजी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं।

मेवाड़ क्षेत्र का यह सौभाग्य है कि वे ब्रज अंचल को छोड़कर यहां चले आए। यहां रहकर उन्होंने मेवाड़ के गौरव को उजागर किया। वे जहां भी रहे, शाश्वत साहित्य की सर्जना की। उनका साहित्य-समाज की प्रकृति को विकृति से हटाकर संस्कृति की ओर ले जा रहा है। नई पीढ़ी को प्रेरणा दे रहा है और नित नये आयाम खोल रहा है।

डॉ. विमला भंडारी सम्मानित

बाल साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर डॉ. विमला भंडारी को उदयपुर में बिग एफ एम द्वारा आयोजित समारोह में

विश्व महिला दिवस पर 'वुमेन ऑफ सब्सटेंस' सम्मान, जयपुर की स्पदंन द्वारा 'स्पदंन बाल साहित्यकार' सम्मान तथा विश्व हिन्दू परिषण द्वारा आयोजित राजभाषा क्षेत्रीय सम्मेलन उदयपुर में 'राजभाषा सम्मान' से नवाजा गया। शब्द रंजन की बधाई।

पुस्तक लोकार्पण एवं सम्मान समारोह

सन्दर्भ समीक्षा समिति भीलवाड़ा द्वारा अशोक रक्ताले को काव्य-गौरव सम्मान, जयसिंह आशावत को दोहा रत्न सम्मान, सन्तोषकुमार सिंह को साहित्य गौरव सम्मान, मायामृग को साहित्य रत्न सम्मान तथा डॉ. हेमलता को सामयिकी काव्य गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप शॉल, कण्ठहार, मेवाडी पगड़ी, सम्मान पत्र एवं दो हजार एक सौ रुपये की नकद राशि प्रदान की गई। संचालन रेखा लोढ़ा 'स्मित' ने किया।

इस अवसर पर रेखा लोढ़ा एवं वीरेन्द्रकुमार लोढ़ा द्वारा सम्पादित दोहा-संकलन 'टुकड़ा-टुकड़ा धूप' का लोकार्पण किया गया। विशिष्ट अतिथि विट्ठल पारीक ने कहा कि 60 के दशक में पाठक बहुत थे और लेखक कम, पर आज लेखक बहुत हैं और पाठकों का अभाव है। मुख्य अतिथि प्रो. डॉ. हेमराज मीणा ने कहा कि हम बहुत बड़े वैचारिक और अर्थ संकट के दौर से गुजर रहे हैं। जनपदीय बोलियों का वैविध्य, बिखरा हुआ लोक-साहित्य, कहावतें व मुहावरे भूलते जा रहे हैं। यदि भाषा के स्तर पर राजस्थानी को मान्यता दी गई तो हिन्दी का नुकसान होगा। वह कमजोर होगी।

-वीरेन्द्रकुमार लोढ़ा

एक सरल चित्त शिक्षक का सहज प्रयाण....

कानोड़ निवासी श्री प्रतापसिंहजी भाणावत (80) नहीं रहे। वे बहुत ही सरल, सहज और आदर्श शिक्षक थे। धर्ममय संस्कार और कर्ममय आचार उनकी जिंदगीनामा के दो प्रबल प्रतीक थे। वे जिनके भी सम्पर्क में आये, सदैव उनमें बस गये। अन्त तक वे अपने सभी कार्यों में स्वावलम्बी और पुरुषार्थी रहे। अभावग्रस्त बालकों को शिक्षा-सहयोग सुलभ कराने के लिए वे सदैव सजग रहे और इस निमित्त एक ट्रस्ट की स्थापना की। इसका सुसंचालन उनके सुयोग्य पुत्र एसबीआई के मुख्य प्रबन्धक नरेन्द्र-सीमा तथा मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के प्रो. डॉ. शूरवीरसिंह-डॉ. कल्पना, पत्नी सुशीला, पुत्रियां सुमित्रा-दिनेश कुदाल तथा मीनाक्षी के परिजन मिलकर कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि स्मृति शेष प्रतापसिंहजी डॉ. तुक्तक-रंजना भानावत के मामाजी थे। शब्द रंजन परिवार की शोकांजलि।

कविता के संग वर्षा का रंग

इतिहास में कई उदाहरण हैं जब कविता ने अपना करिश्मा दिखाया। राजदरबारी कवियों ने तो कविता की शक्ति से लाख पसाव से लेकर करोड़ पसाव तक का इनाम पाया। एक आदर्श शिक्षक के साथ असरदार कविताएं लिखने वालों में मेरी कविताएं भी जहां बच्चों को पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाती रहीं वहीं उनका चमत्कारी फल देख कई लोगों के साथ मैं भी कम चकित नहीं हुआ।

घटना जुलाई 1984 की है। उदयपुर के एसआईइआरटी में सप्ताह भर की पाठ्य-सृजन-संगोष्ठी थी। उसमें राज्यभर के लेखकों के साथ मैं, भगवतीलाल व्यास और डॉ. महेन्द्र भानावत भी थे। परम्परानुसार अन्तिम कार्य-दिवस पर सभी को अपनी-अपनी रचना प्रस्तुत करनी होती है। संस्थान के डिप्टी डायरेक्टर इन्द्रदेव सक्सेना के अलावा मार्गदर्शक राधामोहन पुरोहित, पुरुषोत्तम तिवारी, श्रीराम द्विवेदी तथा शशि शेखर व्यास उपस्थित थे।

वह वर्ष अकालजनित बड़ा सूखा था। पूरे माह एक बून्द बरसात नहीं हुई। मेरी बारी आई तो मैंने अपनी लिखी यह कविता सुनाई-

इन्दर राजा पाणी दो।
पाणी दो गुड़धानी दो।।
उमड़-घुमड़ ने आवो सा।
बादल काला लावो सा।।
धनुस गगन में ताणी दो।
पाणी दो गुड़धानी दो....
सैलां पर्वत घाट्यां की।
गोठ चूरमा बाट्यां की।।
एकबार चक छाणी दो।
इन्दर राजा पाणी दो।।

अपने बुलन्द स्वरों में बड़ी आरजु के साथ मैंने इन्द्रराजा से बरसने का आह्वान किया तो साक्षात् मेहर हो इन्द्र ने पानी बरसाना शुरू कर दिया। परनाले गिरने लगे। कविता के संग वर्षा का यह रंग देख सबका उल्लास छलक पड़ा।

28 फरवरी 2019 को उदयपुर में लम्बी देर तक मेरी डॉ. भानावत से साहित्यिक चर्चा होती रही। इस कविता के प्रसंग में मैंने बताया कि सन् 2010 की लेखक मण्डल की एक संगोष्ठी में बाड़मेर के प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक प्रदीप व्यास ने इसी कविता का समूह रूप में बच्चों द्वारा जब सस्वर पाठ कराया तो उस सूखी धरती पर भी झिरमिर-झिरमिर मेहुड़ा बरसा और जमीन तर हो गई।

- शिव 'मृदुल'

कहावतों के कहकहे (9)

(90) काणी रा ब्याव में विघन घणा
(91) काती कुत्ती ने, माघ बिलाई, कागण मरद, चेत, लुगाई
(92) कादा में भाटो नाको तो छांटाऊं भराओ
(93) कांदा खादा कमधजां, घी खादो गोळांह,
पाली चाली ठाकरां बाजन्ता ढोलांह
(94) कान पकड़ी छाली
(95) कानां रो काचो खोटो
(96) कानून है न कायदौ, बड़ो हुकम में फायदौ
(97) काम को जीने ठा पड़ै बातां करणी होरी है
(98) काम सुधारो डीळां पधारो
(99) काम काळो है, चाय वाळो थेड़ी है

खोज-खबर

ग्वाले का बुद्धि कौशल

ऐसे कई अवसर आते हैं जब कोई बात बड़ी महत्वपूर्ण कह दी जाती है किन्तु उसी बात पर सुनने वाला उससे शोभती सवाई बात कह कर सुनने वाले को सचेत कर सोचने को मजबूर कर देता है। ऐसी ही एक घटना का जिक्र डॉ. श्याम मनोहर व्यास ने किया। सन् 1952-53 में जब मैं छोटीसादड़ी गोदावत जैन गुरुकुल में 9वीं का छात्र था तब डॉ. व्यास से मेरा सम्पर्क बना। गुरुकुल में होने वाली साप्ताहिक सभा में तथा अन्य साहित्यिक-सांस्कृतिक अवसरों पर हमारी भागीदारी ने हमारे सम्बन्धों ने हमें स्थायी रूप से घनिष्ट बना दिया।

डॉ. व्यास ने 15 मई 2018 को हुई एक भेंट में बताया कि मेवाड़ में तब महाराणा भीमसिंह का शासन था। अपने कुछ सरदारों के साथ जब महाराणा एक दिन वन भ्रमण को निकले तो उनके साथ एक चारण सरदार अपनी कविताओं द्वारा उनका मन-बहलाव कर वाहवाही लूट रहा था। चलते-चलते मार्ग में एक गांव आया। वहां कुए पर पणिहारिनें पानी भर रही थीं और उनके पास ही एक ग्वाला छापरड़े की ओर गायों को चराने ले जा रहा था।

महाराणा एक चितकबरी बांकी घोड़ी पर सवार थे। उनके पीछे अन्य बांके सरदार घुड़सवारी किये थे। घोड़ी पर अपनी मूंछों पर ताव दिये महाराणा बड़े बांके लग रहे थे और वैसी ही बांकी नयनों वाली पणिहारिनें थीं। मौका देख चारण ने यह दोहा सुनाया-

गायां तो सींग बांकी, रंग बांकी घोड़ियां।
मरदां तो मूंछां बांका, नैण बांकी गोरियां।।

अर्थात् - गायें सींग से, घोड़ियां रंग से, मर्द मूंछ से तथा नारी नैन से शोभित होती है। ग्वाले को कान में यह स्वर सुनाई दिया। वह अपने चौपे में से एक लंगड़ाती गाय को हांक रहा था। उस गाय का लंगड़ापन देखते ही उसके मगज में एक दूहा फूटा। महाराणा हजूर के सामने तो उसकी क्या बिसात जो वह अपना मुंह खोले किंतु गाय को घेरता बोला- 'चल-चल री ठूंठी, चा'री बातां झूंठी।' ग्वाले का यह कथन महाराणा को कौंध गया। श्रीजी हजूर ने तनिक अपनी घोड़ी उस ग्वाले के पास कर उससे पूछा- 'तुझे कौन सी चारों बातें झूठी लगीं?'

ग्वाला सकपका गया। मेवाड़नाथ के नजदीक से दर्शन कर धन्य हो गया। वह जहां खड़ा था वहीं अपनी कमर तक झुकते हुए बोला- 'खमाघणी! अन्नदाता! मेवाड़नाथ! गुस्ताखी माफ हो पण म्हारे मन री तो या वात है-

गायां तो दूध बांकी, चाल बांकी घोड़ियां।
मरद तो रण बांका, लाज बांकी गोरियां।।

अर्थात् गायें दूध से, घोड़ियां चाल से, मर्द रणक्षेत्र से तथा नारियां लज्जा से शोभित होती हैं।

महाराणा ग्वाले की वाक्पटुता तथा बुद्धि कौशल से बड़े प्रभावित हुए। उसकी प्रशंसा की और इनाम देकर आगे का मार्ग लिया।

बुखार एकांतरा तथा तेजरा विषयक टोटके

बुखार कई तरह के होते हैं। धूजणी अर्थात् कंपकंपी देकर आने वाला, पसीने से तरबतर कर देने वाला, दांतों को कटकटी देने वाला, हल्का, एक दिन छोड़ कर आने वाला एकांतरा तथा दो दिन छोड़ कर तीसरे दिन आने वाला तेजरा के अलावा और भी कई तरह के बुखार होते हैं।

पहले इनका कोई विधिपूर्वक वैज्ञानिक इलाज नहीं था जैसा आज होता है। इसलिए अड़क इलाज ही प्रमुखता लिये था। एकांतरा बुखार को कहानी सुनाकर भगाया जाता था जबकि तेजरा के लिए कई टोटके प्रचलन में थे। यहां कुछ टोटके दिये जा रहे हैं।

कहीं करियावर (मृत्युभोज) में औरतें जीम रही हों तब उनकी बाज से एक-एक कौर जीमण का लेकर तेजरे वाले रोगी को खिला दिया जाता है जिससे वह चंगा हो जाता है।

इसी प्रकार तीन बेवड़ों (घड़ों) वाली पानी लेकर आती पनिहारिन के तेजरा रोगी को पगे लगाने पर (पांव छुवाने, नमस्कार करने) तेजरा उसमें प्रविष्ट हुआ समझा जाता है। यही कारण है कि पनिहारिनें अपने सिर पर दो ही घड़ों में पानी लाती हैं।

एक अन्य टोटके के अनुसार जिसके घर की भींत में सफेद जाला हो उसे संध्या को जाकर नूत आते हैं। प्रात:काल उस जाले को गुड़ में मिलाकर तीन गोलियां बना ली जाती हैं। इनमें से एक गोली सूरज की ओर पूर्व दिशा में फैंक दी जाती है। शेष दो तेजरे वाले को खाने को दी जाती है जिससे तेजरा भागता नजर आता है।

नावे

लोकदेवी-देवताओं के विशिष्ट भक्त, श्रद्धालु, पुजारी और भोपे देवताओं की जो प्रतिकृति, छाया अथवा रूप वाले अंकन अपने गलों में धारण करते हैं उसे 'नावां' अथवा 'नामा' नाम से सम्बोधित किया जाता है।

इसका एक नाम फूल भी सुनने को मिलता है। देवी-देवताओं के ये विविध रूपा नावे बड़े कलात्मक और आकर्षक गुंथान लिए होते हैं। अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार लोग पीतल, धोला तांबा, चांदी अथवा सोने का बना नावा धारण करते हैं। ये नावे आधा इन्च से लेकर छह-छह इन्च तक के होते हैं जिन्हें सुनार लोग बनाते-ढालते हैं।

भारतीय लोककला मंडल के संग्रहालय में इन पाठों तथा नावों का अच्छा संग्रह है। अपनी शोध-यात्रों में हमने पीपलाज माता, रेबारी देव, बिजासण माता, रामदेवजी, रावछेड़ी, रगत्या भैरू, गोरा भैरू, हनुमान, काला भैरू, रामदेव पगल्या, कालका माता, मच्छी माता, सूरजदेव, गणेश, लिछमी, मोगी माता, गोरचर, भ्रमाणी देवी, नारसिंघी, जुंझार, करणी माता, जोगणी, पाबूजी, गोरजा आदि के बड़े कलात्मक नावें एकत्र किये। **-म. भा.**

होली और ईलोजी

उदयपुर से 15 किलोमीटर दूर पीछोला के पार्श्व स्थित सीसारमा गांव में ग्रामीणजनों द्वारा परम्परागत मटका होली तथा ईलोजी के साथ रंग महोत्सव का आयोजन किया गया।

दशामाता-कहानियों की खदान थीं चुन्नीबाई

श्री कृष्णपुरा निवासी चुन्नीबाई बम्ब को दशामाता की 150 से अधिक कहानियां कंठस्थ थीं। उन्होंने 70 वर्ष तक कहानियां सुनाईं। उनका 17 वर्ष पूर्व 87 वर्ष की उम्र में निधन हुआ। उनकी बहू श्रीमती आजाद बम्ब पिछले 46 वर्ष से कथा कहती आ रही हैं। श्रीमती आजाद ने बताया कि उनकी बहू पूजा को बीस वर्ष पूर्व दशामाता का व्रत दिलाया। उसे भी दशामाता की 50 से अधिक कहानियां याद हैं।

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 01 अप्रेल 2019

सम्पादकीय

मौसम की आग

हमारा देश ऋतु-चक्र का देश है। यहां बारह माह में हर दो-दो माह में ऋतु-चक्र की पलटबारी देखने को मिलती है पर अनुभव मुख्य रूप से सर्दी, गर्मी, बरसात का ही होता है। निष्कर्ष यह है कि मनुष्य स्वयं का अस्तित्व प्रकृति के सदाचार का है इसीलिए पुरुष-प्रकृति का मेलजोल ही सृष्टि की सार्थकता है।

सर्दी की ऋतु मारक ऋतु कही गई है। इस ऋतु में सर्वाधिक जीव कष्टमय जीवन व्यतीत करते हैं। सर्वाधिक मृत्युगामी भी बनते हैं। बहुत से जीव शीत-समाधि लेने धरती के नीचे पातालगामी हो जाते हैं।

तब होली आती है यह संकेत देने कि गर्मी आ रही है। होली की ज्वाला जितनी ऊंची जाती है उतनी गर्मी झुलसाने वाली होती है। कहानी तो यह भी कहती है कि होली की ज्वाला में ही शीतला और बोदरी नामक बड़ी और छोटी चेचकनुमा बहिनें झुलस गई। 'बळूं रे बळूं' कहती दोनों बहिनें महलों में पहुंची तो चरवादारों ने घोड़ों के लिए उकलते बाकले छांट दिये। दोनों और अधिक परेशान हो कुम्हार के घर पहुंचीं जहां उन्हें मटके का ठण्डा पानी छिड़ककर पिछले दिन की बासी-ठण्डी राबड़ी पिलाई जिससे दोनों को बड़ा आराम मिला।

देवी रूप दोनों बहिनों ने वहां से चलते कुम्हारिन को कहा कि आज से तीसरे दिन गांव में आग लगेगी जिससे पूरा गांव स्वाहा हो जायेगा पर तुम्हारा घर बचा रहेगा। कुम्हारिन बोली- आग से बचने का उपाय बता जाओ। वे बोलीं- चौथे दिन रात्रि का भोजन बना अगले दिन ठण्डा ही खाना। इससे आग शान्त हो जायेगी। यहीं से शीतला पूजन प्रारम्भ हुआ।

घटना छोटी से छोटी हो, तथ्यहीन नहीं होती। हम उसमें निहित कथा-भाव जानें या न जानें पर बड़ा गूढ़ार्थ लिये होती हैं। बहुत सारे प्रसंग पुराणों में हैं जो किसी न किसी रूप में आज भी लोकजीवन में गहराये हुए हैं।

मां शीतल ा के थापों-अंकनों में सूप और झाड़ू उसके सबसे प्रिय अस्त्र हैं। दोनों स्वच्छता के प्रबल प्रतीक हैं। यदि इनका ध्यान रखकर चलेंगे तो जीवन की शुद्धता बनी रहेगी। मोदी का स्वच्छता अभियान इसी से निकला है जो अब घर-घर राष्ट्रव्यापी बना हुआ है। संकेत है, गर्मी से बचे रहने के लिए स्वच्छ रहो, स्वच्छ खाओ। ताजे बने रहोगे तो ताजगी बनी रहेगी।

गणगौर की सवारी

जयपुर तथा बीकानेर में गणगौर की सवारी बड़ी धूमधाम से निकलती रही है। एक समय था जबकि इस अवसर पर ऊंटों और घोड़ों की दौड़ भी होती थी। 'गणगौर्यां ने ही घोड़ा नहीं दौड़ेळा तो कद दौड़ेळा' वाली कहावत इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

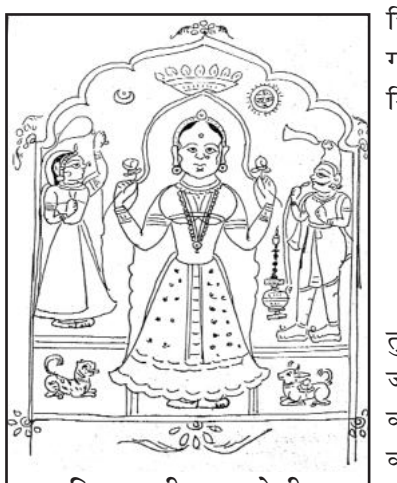

चित्र - श्रीलाल जोशी

नाथद्वारा की गणगौर राजस्थान भर में प्रसिद्ध रही है। सात दिन तक गणगौर की सवारी पूरे राजसी ठाठ-बाट से निकलती थी। सातों दिन सात रंगों में सवारी का प्रबंध होता। ईसर और गणगौर को नित्य नये रंग की पोशाक धारण कराई जाती।

जुलूस वालों के भी उसी रंग के वस्त्र होते। और तो और हाथी की झूलें तक उसी रंग की होती। शहर में जगह-जगह वस्त्र रंगने के लिए रंगरेजों का प्रबंध कर दिया जाता। नगरवासियों तथा बाहर से आने वाले दर्शकों के वस्त्र, पगड़ी, बंधा आदि रंगरेज उसी समय निशुल्क रंग देते। नीली, पीली, लाल, गुलाबी, केसरिया, कसूमल आदि एक ही रंग में रंगे उमड़ते जनसमूह का दृश्य बड़ा मुग्धकारी होता था।

काठ की बनी बड़े कद की ईसर-गणगौर की मूर्तियों की सवारी विविध प्रकार के सोने-चांदी के आभूषणों तथा चमकीले-तड़कीले-भड़कीले कीमती वस्त्र पहनाकर अब भी निकाली जाती है और आपसी हौड़ तथा दौड़ में प्रथम, द्वितीय आने वाले को पुरस्कार दिया जाता है।

ऐसे ठाट-बाट और हंसी-खुशी के समय कुछ स्त्रियां जिनके पति परदेश से नहीं आ पाते हैं, गणगौर का त्यौहार मनाते देखी जाती हैं परंतु उनमें उतना उल्लास, उत्साह और आनंद नहीं देखा जाता जितना कि अन्यों में देखने को मिलता है।

इसलिए शाम के समय जहां एक ओर बाग-बगीचों अथवा तालाब के किनारे घूमर नृत्य गीतों का आनंद लेती हैं वहां दूसरी ओर प्रिय विरह में विरही औरतें अपनी साड़ी का पल्ला झालती हुई अपने प्रियतम को घर बुलाने का गीत गाती हैं। पंक्ति है-

अनोखा कुंवरजी हो सायबा झालो देऊं घर आव।

परन्तु जब प्रियतम आने में असमर्थ दिखाई देता है तो उसकी विरह वेदना तीव्र से तीव्रतर हो जाती है। उस समय उसकी जो मनोदशा, मनोव्यथा होती है उसका चित्रण जिस खूबी से व्यक्त किया गया है वैसा अन्यत्र देखने को कम मिलता है।

भंवर घड़ाजो जी
हजारी ढोल भंवर घड़ाजो जी
म्हारी रखड़ी ऊपर
भमर करे वी आया रीजोजी।

ए, मेरे हजारों में से एक प्रियतम! तुम किसी न किसी प्रकार अवश्य आ जाओ। कारण कि लोग मेरी रखड़ी पर कई प्रकार की भूलें और भ्रम पैदा करते हैं।

उसका प्रियतम जब उसे आज की बजाय कल आने की बात कहता है तब वह कह बैठती है-

म्हैं तो मरूं कटारी खाय हजारी
ढोला कल मत आजो जी।
म्हारी रात रसोई ताजा भोजन
सीला मत करजो जी।
म्हारो रतन परिंडा रो ठंडो
पाणी सीलो मत करजो जी।
म्हारो छपर पलंग मिसर रा
तकिया सूना मत करजो जी।

हे नाथ! तुम कल आकर क्या करोगे? कल तो मैं कटार भौंककर स्वयं ही अपने प्राण पखेरू उड़ा दूंगी। मेरे रत्नों से जड़े परेंडे का ठंडा पानी भी गरम हो जायेगा तथा कहीं मेरे छप्पर पिलंग और मिश्र के बने तकिये तुम्हारी प्रतीक्षा में सूने न पड़े रह जायें। तुम किसी भी तरह अवश्य आ जाओ।

इस प्रकार सरोवर की पाल पर गणगौर की मूर्तियां रखकर संभ्रांत नारियां, कुंवारी कन्याएं सौभाग्य और मंगल के गीत गाती हैं। नृत्य करती हैं और हर्ष उल्लास की नई उमंगों में डूबती उतराती संध्या के धूमिल वातावरण में खो जाती हैं। **प्रस्तुति : डॉ. कविता मेहता**

सुराणा साहब का सान्निध्य लिए गुरुकुल का वह स्वर्णकाल

-बनवारीदत्त जोशी-

मेरा यह सौभाग्य रहा कि मैं हिन्दी-राजस्थानी के ख्यात लेखक डॉ. नरेन्द्र भानावत का सहपाठी रहा। तब श्री गोदावत जैन गुरुकुल छोटीसादड़ी का मेवाड़-मालवा तक बड़ा नाम था। वहां पढ़े छात्रों ने विविध क्षेत्रों में बड़ा नाम कमाया। सन् 1952 में मैंने तथा डॉ. भानावत ने साथ-साथ हाईस्कूल की परीक्षा दी। शनिवार को साप्ताहिक बालसभा में नरेन्द्रजी अपनी कविताओं के माध्यम से छाये रहते। मैं अधिकांशत: पढ़ाने वाले गुरुजनों की हू-ब-हू नकलें उतार पूरी सभा को हंसगुल्ले देता रहता। एकबार कवि-दरबार लगा तो मैं गड़बड़ कवि बना। यह छन्द अभी भी याद है-

कृष्ण चले ब्रज भूमि को, राधा पकड़ी बांह।
कोयला यहां से ले चलो, वहां मिलेंगे नांह।।

हमारे बाद महेन्द्रजी आये जो आज लोकसंस्कृति के क्षेत्र की अतुलनीय हस्ती हैं। हमारे प्रधानाध्यापक नेमिचन्दजी सुराणा थे। वे सौम्य सादगी के देवपुरुष ही थे। शिक्षा-जगत में उनका बड़ा नाम और आदर था। वे मितभाषी तथा मृदुल व्यवहार के साथ सदैव मुस्कान लिये क्रियाशील, अपने हाल में मस्त रहने वाले मौजी जीव थे। अपनी बत्तीस वर्षीय शिक्षा-सेवा के पश्चात वे अपने जन्मस्थान विजयनगर चले गए। वैवाहिक जीवन का उन्होंने सुख नहीं लिया। जीवन पर्यन्त एकाकी रह 93 वर्ष पार किये। पेंशन नहीं होने पर 85 वर्ष की आयु में भी अध्यापन के लिए मननशील रहे। जो कुछ कमाया अपने भाई को दे दिया। वे खद्दरधारी पेंटनुमा पजामा और ऊपर जब्बा पहनते थे। काला चश्मा लगाते। गहरे गेहुंए रंग में वे सदैव चुस्त रहकर सबमें लोकप्रिय बने रहे।

सौजन्य : डॉ. खटका राजस्थानी

उस समय के गुरुजनों में सब एक-से-बढ़कर-एक अपने-अपने विषय के निष्णात तथा हर समय छात्रों की हित चिन्तना करने वाले थे। उनमें से अधिकांश स्मृति शेष हैं। शोभाचन्दजी वया, गुरुदत्तजी शर्मा, सागरमलजी बीजावत, धर्मपालजी गर्ग, पुखराजजी जैन, राधामोहनजी पुरोहित, कन्हैयालालजी 'अनंत', ज्ञानजी भारिल्ल, शेषमलजी चोरड़िया, नानालालजी मट्ठा, डॉ. राजमलजी नाहर, नृसिंहजी अग्रवाल, सोहनलालजी जैन, मोहनलालजी सोनी, केशरीकिशोरजी नलवाया, हरिसिंहजी मेहता, मदनजी कटारिया आदि थे। मंत्री चांदमलजी नाहर की देखरेख में सारी प्रवृत्तियां अविराम उत्कर्ष पर थीं।

छठे दशक का वस्तुत: स्वर्णकाल था। वहां से निकले कई छात्रों ने दूर-सुदूर तक अपनी रोशनी फैलाई। कुछ साथियों में इन्दौर के डॉ. धीरज गांधी हृदयरोग विशेषज्ञ के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति लिए हैं। अमृत मूणत प्राकृतिक चिकित्सा संघ के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं। अनिल तथा अरविन्द वया उच्च प्रतिष्ठानों में नामचीन सेवायें दे रहे हैं। मनोहर नागोरी, पुखराज वया, निरंजन नागोरी उद्योग जगत में प्रतिष्ठित नाम हैं। देवीलाल चावत पुलिस-सेवा का उच्चादर्श पद पाये हैं। सिरेमल सेठिया साहित्य का श्रेष्ठत्व लिए हैं।

याद आ रहा है पहली नवम्बर 1998 को गुरुदेव सागरमलजी बीजावत ने पूर्व छात्रों एवं शिक्षक मनीषियों का एक स्नेह सम्मेलन गुरुकुल में आयोजित किया जिसका संचालन मुझे सौंपा गया था। सुराणा साहब भी उसमें पधारे थे। उनकी आर्थिक स्थिति की जानकारी मिलने पर हम कुछ विद्यार्थियों ने उन्हें कुछ आर्थिक भेंट स्वीकार करने का निवेदन किया तो उनके शब्द थे- 'मैं आप लोगों के प्रस्ताव को विनम्रतापूर्वक अस्वीकार करता हूं।'

कोई एक वर्ष पश्चात उनका एक पत्र मुझे मिला। उसमें परिस्थितिजन्य उन्होंने लिखा- 'चूंकि घुटने का प्रत्यारोपण कराना अनिवार्य है अत: शारीरिक रूग्णता एवं आर्थिक विपन्नता के कारण आप चाहें तो अब वह आर्थिक सहायता कर सकते हैं।' मैंने कुछ परिचित मित्रों के नाम एक अपील भेजी और निवेदन किया कि वे जो भी सहायता राशि भेजना चाहें, सीधे सुराणा साहब को भेद दें। एक माह बाद सुराणा साहब का धन्यवाद और आशीर्वाद के साथ पत्र मिला। प्राप्त सहायता राशि की नामजद सूची भेजकर लिखा कि कुल 47500 रूपये में से 42000 रूपये घुटनों के ऑपरेशन में व्यय हुए हैं। शेष राशि को किस अनुपात से कैसे लौटाऊं। मैंने विनम्रतापूर्वक लिखा- 'आपकी शरीरिक रूग्णता दूर हुई, इससे हमें हार्दिक प्रसन्नता हुई। अब आपमें आर्थिक विपन्नता नहीं रहे अत: शेष राशि लौटाने की आवश्यकता नहीं है।'

वे जब तक रहे, सबके हालचाल पूछते रहे और प्रेरणा के सम्बल बने रहे। बीजावत साहब भी उसी तरह आज भी हमारे मार्गदर्शक बने हुए हैं। हाईस्कूल के बाद कॉलेज तक की पढ़ाई के दौरान कितने ही गुरुओं का हमें सान्निध्य मिला। हममें से भी कई शिक्षक-सेवा में रहे किन्तु वह दौर और वैसे गुरुवृन्द कहीं देखे-सुने नहीं गये। पानी पर की लहरों की तरह कोई भी स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ पाया। ऐसे में सुराणा साहब और अन्यों की हमारे हृदय में जो अमिट छाप बनी हुई है वह सचमुच में विनम्र नमनीय है। उन्हें शत-शत नमन।

स्मृतियों के शिखर (72) : डॉ. महेन्द्र भानावत

मूमल और माण्ड की मथनी लिए दीनदयाल ओझा

जैसलमेर और दीनदयाल ओझा एक ही सिक्के के दो रूप हैं। जैसलमेर को अथ से इति तक समझना हो तो वहां के केलापाड़ा स्थित साहित्य साधना सदन चले जाइये। उस सदन में प्रवेश करते ही आपको अपनापा लिए महर्षि सा एक ऐसा मोहक व्यक्ति मिल जायगा जो जैसलमेर की सबरंगी हवा, पानी और माटी का चितेरा बन जैसे आपकी ही अगवानी में प्रतीक्षातुर है। उनकी आत्मीय यारबाजी में कैद होकर आप सदैव के लिए उनके कायल हो जायेंगे।

डॉ. दीनदयाल ओझा का जन्म 27 अक्टूबर 1929 का है। आजाद होते ही वे रेलवे के वर्कशॉप की नौकरी में बीकानेर चले गये। उनके पिताश्री पं. माणकलाल जैसलमेर रियासत के हाकम थे सो ओझाजी का शाही ठाठ से लालन-पालन हुआ। छोटी उम्र में बड़े बने रहकर घुड़सवारी तक का ठाठ लिया। खूब घोड़े दौड़ाये। कहीं चूके नहीं और चौकन्ने बने रहे।

मेरी उनसे पहली मुलाकात सन् 1956 में बाकानेर में उनके निवास बिन्नाणियों का चौक में हुई। भाई साहब डॉ. नरेन्द्र भानावत उनसे परिचित थे। वे वहीं अध्ययनरत थे। जब मैं बीकानेर पहुंचा तो वे मुझे उनसे मिलाने ले गये। वहां मैं सन् 1958 तक रहा। इस बीच उनसे

कई बार भेंट होती रही। उन्होंने मुझे मोहनलाल पुरोहित से भी उनके निवास पर मिलाया। वे भी जैसलमेर के थे और दीनदयालजी के साथ ही रेलवे में काम करते थे। मैं एक बार उनके रेलवे वर्कशॉप में भी दोनों से मिला। पुरोहितजी तब व्रत-कथाओं पर काम कर रहे थे। बीकानेर में मेरा साहित्यिक परिवेश अपनी पैठ और पहचान में पैर जमाने लायक हो गया था। तब यादवेन्द्र शर्मा, हरीश भादानी तूती पर थे। शम्भूदयाल सक्सेना का एकांकी पढ़ते थे। बड़ी उत्सुकता से उनके नवयुग ग्रन्थ कुटीर में दर्शन करते थे।

ओझाजी का बीकानेर निवास बड़ा शुभ शकुन लिये रहा। वहां रह रहे साहित्य मनीषियों में अगरचन्दजी नाहटा, नरोत्तमदासजी स्वामी, विद्याधरजी शास्त्री, अक्षयचन्द्रजी शर्मा, चन्द्रदानजी चारण का तब बड़ा नाम और साहित्य में प्रकाशस्तंभीय प्रभावना थी। इनके अलावा वहां आने वाले डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, परशुराम चतुर्वेदी, डॉ. रघुवीरसिंह, सीताराम लालस, डॉ. नारायणसिंह भाटी, पं. जनार्दनराय नागर, डॉ. मोतीलाल मेनारिया जैसी दिग्गज हस्तियों का सान्निध्य भी ओझाजी को मिला। इससे उनकी साहित्यिक अभिरूचि को प्रज्ञावान प्रखरता मिली जिससे वे लेखन की ओर गहराई से पैठते गये।

भाई साहब के कारण बचपन से ही मुझ में साहित्यिक अभिरूचि का पाण चढ़ गया। चौथी की पढ़ाई में कविता करना शुरू कर दिया जो ओझाजी की मैत्री की तरह अब भी अमिट बना हुआ है। भाई लोग कहते हैं, पद्य छूटने पर गद्य में उसकी लालित्य लालिमा निखर आती है पर उससे पीछा छूटता नहीं है।

तब से लेकर ओझाजी और मैं वैसे ही हैं जबकि बीच के इस लम्बे पड़ाव में अन्य कई मिलने वाले ऐसे-वैसे, कैसे-कैसे हो गये हैं। अपनी आपस की कुशलक्षेम के साथ हमारी पारिवारिक कुशलक्षेम भी वैसी ही बनी हुई है। यद्यपि परिवर्तन कई हो गये हैं। हमारी बहुत सी वत्सल निधियां देखते-देखते हमारी मुट्ठी सूनी कर गई हैं।

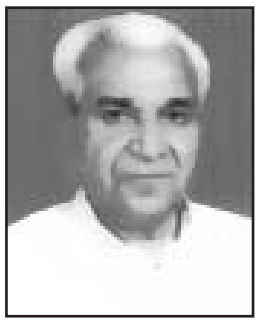

बीकानेर की बी. ए. की पढ़ाई पूरी कर मैं उदयपुर के भारतीय लोककला मण्डल में आ गया। पत्राचार द्वारा हम अपनी साहित्यिक हलचल एक-दूसरे को देते रहे। ओझाजी के कुछ पत्र मैंने सम्भाले हुए हैं। एक पत्र यहां दे रहा हूं जो 28 अप्रेल 1970 का बीकानेर का लिखा हुआ है।

बिन्नाणियों का चौक, बीकानेर
28.4.2018

प्रियश्री महेन्द्र भानावत
सप्रेम वन्दे

पिछले दो-तीन वर्षों तक निरन्तर मौन और अप्रकाशित रहने के कारण कई प्रेरणादायक मित्रों से सम्बन्ध विशेषत: सृजनधर्मी सम्बन्ध कट सा गया और मैं अपने आपको कुछ-कुछ एकाकी और कटा हुआ सा मानने लगा। आपके अनेकों प्रेरणादायक एवं स्नेहभरे, उपालम्भपूर्ण पत्र भी मिले परन्तु न जाने किन कारणों से उत्तर न दे पाया। मैं आज भी समझ नहीं पा रहा हूं परन्तु अब कृत संकल्प से साहित्य साधना की दिशा में आगे आने का विचार कर लिया है।

पिछले तीन वर्षों में आपने जिस साधना, लगन और निष्ठा से कार्य किया है उससे लोकसाहित्य विशेषकर लोकनाट्यों के सन्दर्भ में अनेकों रहस्यों का उद्घाटन हुआ है। उन सभी कार्यों के लिए आपको अपनी हार्दिक बधाइयां प्रेषित करता हूं। उदयपुर तो कला का ही केन्द्र है। आपके साथ जो दिन बिताये और आपने जो भावभरा स्वागत किया वह आज भी स्मरण हो रहा है।

दीनदयाल ओझा

अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का पूर्णत: निर्वाह करते ओझाजी ने स्वाध्याय से प्रभाकर तथा साहित्यरत्न ही नहीं, एम. ए. तक की पढ़ाई पूरी की। उनका लेखन हिन्दी तथा राजस्थानी में निरन्तर रहा। कविता, कहानी, निबन्ध, गीत, नाटक, वार्ताएं विविध पत्र-पत्रिकाओं के साथ आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित होती रहीं। पाठ्य-पुस्तकों में भी उनकी रचनाएं सम्मिलित होकर सम्मान पाती रहीं। विविध अकादमियों, संस्थानों तथा क्लबों-ट्रस्टों ने भी उनकी विद्वता का सम्मान किया। अनेक अलंकरणों, उपाधियों, पुरस्कारों ने जहां उनका यशवर्धन किया वहां सम्मानकर्त्ता भी गौरवमंडित हुए।

जैसलमेर जनपद के अधिकारी खोजक के रूप में उनकी दूर-दूर तक पहचान बनी। पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति, कला, स्थापत्य, संत साहित्य तथा लोकज्ञात-ख्यात आदि विविध विधाओं के वे मानक कोष ही बन गये। अपने पिताश्री के पश्चात वहां के राजघराने के परामर्शक के रूप में अपनी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए भी उन्होंने अपनी साफ सुथरी छवि से लब्धि ली।

उनकी लिखी पुस्तकों से उनके खोजक तथा गहन अध्येता का व्यक्तित्व आंका जा सकता है। जनपदीय संत और उनकी वाणी, सोढ़ी नाथ रा गूढ़ार्थ, गोस्वामी हरिराय महाप्रभु की चतुर्थ बैठक जैसलमेर, मूमल और उसका जीवनवृत्त, राजस्थान का वासन्तिक पर्व गणगौर जैसी पुस्तकों ने अन्यों को भी अपने-अपने जनपद में कार्य करने की प्रेरणा दी। बारी-बारी से अपनी लिखी पोथियों का भी हम आपस में आदान-प्रदान करते रहे।

उनके कहने से भारतीय लोककला मण्डल के माध्यम से मैंने भी जैसलमेर जनपदीय लोककला-संस्कृति से जुड़े कलाकारों, गायकों, वादकों, नर्तकों तथा शिल्पियों का अध्ययन-अनुसंधान किया। लंगा मांगणियारों के श्रेष्ठ गायकों-वादकों को आमंत्रित कर वहां की एक धर्मशाला में तीन दिवसीय शिविर आयोजित किया।

वहीं लगभग 36 घंटों का रेकार्डिंग कर गायकी की जो समृद्ध थाती ली वह तो अनमोल निधि ही सिद्ध हुई। इसका प्रभाव यह रहा कि विविध अकादमियों और संस्थाओं ने अपने द्वारा आयोजित समारोहों, विशिष्ट आयोजनों तथा अवसरों पर इन कलाकारों की प्रस्तुतियां प्रारम्भ कर दीं। देखते-देखते उनकी पहचान विदेशों के पार तक पहुंच गई।

भारतीय लोककला मण्डल ने अपने मंच पर गायक नूर मोहम्मद लंगा, खड़ताल वादक सिद्दीकी, भजन गायिका सोहनीबाई, अल्लाजिलाईबाई, जोधपुर की गवरीदेवी तथा नड़ वादक करणा को आमंत्रित कर उनकी होनहार कला-धर्मिता से सबको परिचित कराया। इस दृष्टि से कलामण्डल लोक-कलाकारों के लिए एक तीर्थ ही सिद्ध हुआ।

मेरा यह सौभाग्य रहा कि ये सारी प्रवृत्तियां मेरे ही संयोजन में होने के कारण न केवल इनके प्रदर्शनों को ही मैंने बारीकी से देखा अपितु उनसे संसर्ग-सम्पर्क कर उनकी परम्पराजनित विरासत और कलात्मक कौशल से अपना अध्ययन पकाया और लेखन ही नहीं, प्रकाशन भी दिया। अल्लाजिलाईबाई और सिद्दीक तो 'पद्मश्री' ही हो गए।

दूसरी बार की अपनी यात्रा में मैंने जैसलमेर के कई गांवों का दौरा कर वहां की लोकधर्मी जीवन रचनावाली को हृदयंगम किया। त्यौहारजनित लोक रंगीनियों का भी मजा लिया। वहीं मैंने मूमल की मेड़ी और काक नदी के लुप्त-गुप्त वैभव तथा उन धोरों में खोये मूमल-महेन्द्र के प्रणय को जैसे प्रतिध्वनित होते अनुभूत किया। रम्मती ख्यालों के उन कलाकारों से भी भेंट की जिनके पास उस विरासत की गंध ही बची रह गई थी। इन ख्यालों के नामधन्य तेज कवि के वंशधर नंदकिशोर शर्मा से भेंट की। उन्हें लोकानुरंजन समारोह में अपने रम्मती ख्याल दल के साथ भी आमंत्रित किया।

यहां उन्होंने फिर से तेज कवि के रम्मत ख्यालों की मण्डली जोड़कर बड़े मनोयोग से जो प्रदर्शन दिया उससे उन्हें तो भरपूर वाहवाही मिली ही किन्तु हमें यह शकुन मिला कि एक ऐसी विधा पुनर्जीवित हुई जो तेज कवि के समय सर्वाधिक नामवरी लिये थी।

तेज कवि के रूतबे का क्या कहना! महात्मा गांधी तक उनसे अत्यधिक प्रभावित हुए। अपनी ख्याल मण्डली द्वारा तेज कवि ने आजादी का जबर्दस्त शंख फूंका और जनजीवन को जनान्दोलन के लिए प्रेरित किया था। उदयपुर में हमारे लोककला संग्रहालय से प्रेरणा ले नंदकिशोरजी ने जैसलमेर में कला संग्रहालय प्रारम्भ किया जो वहां जाने वाले पर्यटकोंका अभिराम दर्शन बना हुआ है।

इन सबके बीच ओझाजी मुझे उस मध्यकालीन आदर्शवादिता के ही सुपात्र बने लगते हैं जिन्होंने आज भी उन पावन मूल्यों की उज्ज्वलधर्मिता को अपने में संवार रखा है। उन्होंने जैसलमेर की मूमल और माण्ड की मथनी कर जो तत्व दिया उसकी पारदर्शिता पूरे विश्व में दर्शित हुई है।

अपनी मां और माटी की महक को नमन किये ओझाजी पहले की तरह आज भी वैसे ही पाणीदार, सजग, चुस्त और चौकसी किये लगते हैं। आज भी हमारे आपसी फोन मिल-मिलाते साक्षात् मिलने जैसी सरसता छलकाये रहते हैं। उनका लिखा 11 अगस्त 2018 का एक पत्र देखिये-

साहित्य साधना सदन
केला पाड़ा, जैसलमेर-345001 (राज)

समादरणीय डॉ. महेन्द्र भानावत
जय जिनेन्द्र

प्रत्यक्ष मिलन और परस्पर संवाद की सी सरसता आपसे फोन पर हुई वार्ता से प्राप्त हुई। जीवन के दस कम सौ वर्ष पूरे कर लिये। अब आपकी और आप तुल्य अन्यान्यों की सद्भावना पर सानन्द जीवन जी रहा हूं। समग्र परिवार को मेरी ओर से शुभाशीष कहना। शब्द रंजन मेरे लिये शब्द-ब्रह्म मन-रंजन है। आपके लेखों की प्रत्येक जीवन्त सरस भावों भरी पंक्तियां नानाविध अतीत का स्मरण दिलाती हैं। उदयपुर के साहित्यकारों को मेरा वन्दन-निवेदन कहना।

आपका ही
दीनदयाल ओझा

सैनिकों एवं परिजनों की आंखों का नि:शुल्क उपचार

उदयपुर। अलख नयन मंदिर अपने प्रारंभिक काल से ही देशसेवकों, सैनिकों तथा शहीदों और उनके परिजनों की निशुल्क नेत्र सेवाएं करने पर संकल्पित रहा है। इसी कडी में आज भारतीय सैनिकों और उनके परिजनों के सम्मान में पुन: अपने संकल्प को दौहराते हुए निशुल्क नेत्र सेवा देने का दृढ निश्चय किया। इस संदर्भ में उदयपुर छावनी स्टेशन कमांडर कर्नल दीपक रामपाल व श्वष्ट॥स्- पोली क्लीनिक के कर्नल प्रवीण सक्सेना से मिलकर मंदिर द्वारा सेवाएं देने पर विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर अलख नयन मंदिर के मेडिकल डायरेक्टर चर्चा कर सेवाएं देने का संकल्प पत्र सौंपा गया।

कमांडर कर्नल दीपक रामपाल एवं प्रवीण सक्सेना ने अलख नयन डॉ लक्ष्मणसिंह झाला, मैनेजिंग ट्रस्टी श्रीमती लक्ष्मी झाला, एजुकेटिव ट्रस्टी श्रीमती मीनाक्षी चुंडावत, एवं ट्रस्टी डॉ. एम. एस. राठौड ने भारतीय सैनिकों एवं उनके परिवारों के लिए अलख नयन मंदिर ने आंखों के हर प्रकार के रोगों के उपचार के लिए निशुल्क जांच एवं परामर्श देने का वादा करते हुए संकल्प पत्र प्रदान किया। इस सेवा का लाभ लेने के लिए भारतीय जल, थल एवं वायु सैनिकों को मिलिट्री हॉस्पिटल से रेफरल लाने पर ही यह सुविधा उपलब्ध होगी।

वेदांता के 500वें नंदघर का शुभारंभ

उदयपुर। प्राकृतिक संसाधनों के लिए जानी मानी कंपनी वेदांता समूह ने जयपुर के चाकसू ब्लॉक में 500वें नंदघर का शुभारंभ किया। इसके माध्यम से 17,000 से अधिक बच्चों और 15,000 महिलाओं तक अपनी पहुंच बनाने के साथ राजस्थान, उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश में बालअवस्था विकास का लक्ष्य पुरा करने की ओर अग्रसर है। वेदांता आने वाले कुछ वर्षो में पूरे भारत में 4 हजार नंदघर स्थापित करने के लिए 800 करोड़ रुपये खर्च करेगा।

वेदांता ग्रुप के संस्थापक और अध्यक्ष, अनिल अग्रवाल ने कहा कि राष्ट्र की महिलाओं और बच्चों के भविष्य में निवेश करने से ही प्रगति संभव है। इस विचारधारा के अनुरूप, वेदांता समूह महिला और बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से 11 राज्यों में 4,000 नंदघर बना रहा है, जो 14 लाख आंगनवाड़ियों का बदलाव करेगा। इससे 8.5 करोड़ बच्चे और दो करोड़ महिलाएं लाभान्वित होंगे। उन्होंने कहा कि हमारी प्राथमिकता बच्चों और महिलाओं का समग्र विकास जमीनी स्तर पर शुरू करना है, जो राष्ट्र का भविष्य बनाते हैं। यह परियोजना पूर्व-प्राथमिक शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, बच्चों के लिए पोषण और ग्रामीण भारत में महिलाओं के लिए आर्थिक सशक्तीकरण के लिए संकल्पित है। नंदघर अत्याधुनिक कक्षाकक्ष, सुरक्षित खेल का मैदान, ई-लर्निंग, पौष्टिक भोजन, सौर पैनल और मोबाइल हेल्थकेयर वैन से सुसज्जित है।

एम्स जोधपुर की टीम बनी रीजनल फाइनल्स की विजेता

उदयपुर। पैसिफिक यूनिवर्सिटी में आयोजित टाटा क्रूसिबल कैम्पस क्विज 2019 प्रतियोगिता के उदयपुर एडिशन में ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एम्स), जोधपुर के अंशुल शर्मा और सृजन शर्मा विजयी रहे। इस सिटी लेवल फिनाले में कुल 177 टीमों ने मुकाबला किया। विजेताओं अंशुल शर्मा और सृजन शर्मा को 75,000 रूपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। अब ये नेशनल फिनाले में क्वालिफाई करने के लिये जोनल राउंड में मुकाबले करेंगे। ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एम्स) की जागृति झा और साहिल अहमद मंसूरी को उपविजेता घोषित किया गया जिन्हें 35,000 रूपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रतियोगिता की मुख्य अतिथि पैसिफिक यूनिवर्सिटी की डायरेक्टर डॉ. महिमा बिरला थीं।

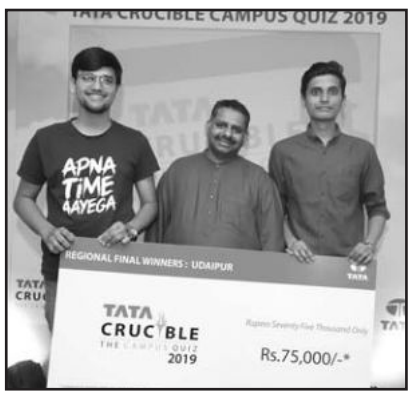

इस साल, क्विज के थीम को 2019 क्रिकेट वर्ल्ड कप का जश्न मनाने के लिये टी-20 क्रिकेट फॉर्मेट में डिजाइन किया गया। मशहूर क्विजमास्टर पिकब्रेन गिरि बालासुब्रमण्यिम ने अपनी उत्कृष्ट, अद्वितीय और मजाकिया शैली में क्विज की मेजबानी की। भारत के सबसे बड़े कैम्पस क्विज के 15वें संस्करण का संचालन लगभग दो महीने तक 40 शहरों में किया जायेगा। इसमें पांच जोनल राउंड्स होंगे और उसके बाद मुंबई में नेशनल फिनाले का आयोजन किया जायेगा। नेशनल फाइनल्स के विजेताओं को प्रतिष्ठित टाटा क्रूसिबल ट्रॉफी के साथ 5,00,000 रूपये का ग्रैंड प्राइज दिया जायेगा। फास्ट्रैक द्वारा क्विज के इस संस्करण के लिये पुरस्कार में सहयोग दिया जा रहा है।

छात्र नेताराम गरासिया को भेंट की नई ट्राई साइकिल

उदयपुर। दिव्यांग आदिवासी छात्र नेताराम गरासिया की ट्राई साइकिल सूरजपोल चौराहे से चोरी होने पर

नारायण सेवा संस्थान ने मदद का हाथ हाथ बढ़ाया है। संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने नेताराम गरासिया को नई ट्राई साइकिल भेंट की। इस पर नेताराम ने खुशी जताते हुए संस्थान का धन्यवाद किया। प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि हमें खुशी है कि हमने दिव्यांग नेताराम को खोई ट्राई साइकिल के बदले दूसरी ट्राई साइकिल दिलाई है। उल्लेखनीय है कि नारायण सेवा संस्थान द्वारा 7.95 लाख व्हीलचेयर और 2.59 लाख ट्राई साइकिल जरुरमंदों को बांटी जा चुकी है।

गीतांजली हॉस्पिटल को जल संरक्षण पुरस्कार

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटलर को प्रथम जल संरक्षण पुरस्कार-2019 से नवाज़ा गया।

यह पुरस्कार राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव आईएएस डीबी गुप्ता एवं वी सुरेश, अध्यक्ष भारतीय हरित भवन परिषद ने गीतांजली के सीईओ प्रतीम तम्बोली को दे कर सम्मानित किया।

सिम्स हॉस्पिटल में हार्ट ट्रांसप्लांट का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। सिम्स हॉस्पिटल ने सर्जरी के क्षेत्र में एक बार फिर नया मुकाम हासिल करते हुए सफलतापूर्वक 8वें हृदय प्रत्यारोपण को अंजाम दिया। यह हृदय सड़क दुर्घटना के पश्चात् ब्रेन डेड घोषित किये जा चुके 25 वर्षीय युवक से लिया गया था, जिसे शेल्बी हॉस्पिटल से लाया गया था। इसके द्वारा सिम्स हॉस्पिटल में 43 वर्षीय मरीज को नया जीवन मिला है। प्रत्यारोपण की इस प्रक्रिया में कार्डियक सर्जरी टीम डॉ. धीरेन शाह, डॉ. धवल नाइक, डॉ. अमित चन्दन, डॉ. चिंतन शेठ, डॉ. नीरेन भावसार तथा डॉ. हीरेन ढोलकिया शामिल थे।

डॉ. धीरेन शाह ने कहा- 8वां सफल हृदय प्रत्यारोपण ने एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया है लेकिन यह सबकुछ अंग दान देने वाले व्यक्ति तथा उनके परिवार के सहयोग के बिना सम्भव नहीं था। हृदय को ग्रहण करने वाले राजकोट निवासी 43 वर्षीय युवक पिछले सात वर्षो से दिल की घातक स्थिति डायलेटेड कार्डियोमायोपैथी से ग्रसित थे। इस स्थिति में हृदय का आकार बड़ा हो जाता है और खून को पम्प करने की सामान्य प्रक्रिया गड़बड़ा जाती है। परिणामस्वरूप फेफड़ों, लिवर एवं शरीर के अन्य महत्वपूर्ण अंगों पर भी बुरा प्रभाव पड़ने लगता है। ब्रेन डेड मरीज के परिवार ने उसका हृदय तथा लिवर दान कर दिया था। हृदय को सिम्स हॉस्पिटल लाया गया जबकि लिवर का उपयोग शेल्बी हॉस्पिटल में ही एक मरीज के प्रत्यारोपण के लिए किया गया।

एपिरोक के नए केंद्र का शुभारंभ

उदयपुर। माइनिंग, इन्फ्रास्ट्रक्चर और नेचुरल रिसोर्सेज उद्योगों के लिए उपकरण बनाने वाली स्वीडिश कंपनी एपिरोक ने उदयपुर के अम्बेरी क्षेत्र में अपने नए वितरण, नवीनीकरण और प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ किया। उद्घाटन अंडरग्राउंड रॉक एक्सकवेशन के प्रेसीडेंट समी निरेनन और हिंदुस्तान जिंक लि. के सीईओ सुनील दुग्गल ने किया। इस अवसर पर एपिरोक माइनिंग इंडिया के प्रबंध निदेशक जेरी एंडर्सन भी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि हिंदुस्तान जिंक एपिरोक इंडिया के सबसे प्रतिष्ठित ग्राहकों में से एक है।

जेरी एंडरसन ने कहा कि यह सुविधा एकीकृत वितरण आपूर्ति, प्रशिक्षण और नवीनीकरण केंद्र की भूमिका निभाएगी। यहां से प्रत्येक साइट पर दैनिक रूप से पार्ट्स की आपूर्ति कर सकते हैं और जब कभी ब्रेकडाउन की स्थिति हो, तो उसे भी कुशलतापूर्वक संभाल सकते हैं। इस केंद्र में ऐसे पार्ट्स और रॉक ड्रिलिंग उपकरण उपलब्ध हैं, जो व्यवसाय के संचालन में आवश्यक हैं।

समी निरेनन ने कहा कि यह सुविधा हिंदुस्तान जिंक के संचालन को बेहतर ढंग से पूरा करने का अवसर देती है। सुनील दुग्गल ने कहा कि इस तरह की सुविधा भारत में बहुत कम है और यह एक सपने के साकार होने के समान है। एपिरोक के साथ यह साझेदारी दशकों से है और हमने एक साथ लंबी दूरी तय की है और आगे भी इस साझेदारी के मजबूत बने रहने की उम्मीद है।

इंडिगो का तीन नये रूट्स पर परिचालन शुरू

उदयपुर। कम किराये में हवाई यात्रा की पेशकश करने वाली देश की सबसे बड़ी विमानन कंपनी इंडिगो ने तीन नये रूट्स की पेशकश की है और इसके द्वारा चैन्नई-रायपुर, हैदराबाद-गोरखपुर और कोलकाता-गोरखपुर के बीच इसकी पहली उड़ानें चलाई जायेंगी। विलियम बाउल्टर, चीफ कॉमर्शियल ऑफिसर, इंडिगो ने कहा कि चैनई, रायपुर और गोरखपुर को जोड़ने वाले तीन नये रूट्स के साथ हमारे नेटवर्क में 14 नई उड़ानों को शामिल करते हुये हमें बेहद खुशी हो रही है। इंडिगो ने भारतीय बाजार में एक लो कॉस्ट कैरियर के रूप में परिचालन के 12 साल सफलतापूर्वक पूरे कर लिये हैं। इसके नेटवर्क में नई उड़ानों के शामिल होने से कनेक्टिविटी और भी बेहतर होगी, जो हम हमारे ग्राहकों को उपलब्ध कराना चाहते हैं।

स्मृति शेष हुए शिवजी

- डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना

श्री शिवकिशोर सनाढ्य जिन्हें हम स्नेहवश शिवजी कहते ; सहृदय, सरल, सेवाभावी, जनप्रिय, हंसोड़ एवं मित्रों के मित्र थे। वे दोस्ती निभाना जानते थे। ऐसा मित्र मिलना दुर्लभ है।

24 मार्च 1935 को मथुरा में जन्मे शिवजी आठ वर्ष की आयु में उदयपुर आए और यहीं के होकर रह गए।

जनप्रिय राजनेता और जुझारू शिक्षक नेता के रूप में उनकी एक अलग छवि थी। धर्म, अध्यात्म, समाज, राजनीति, साहित्य, संस्कृति सभी क्षेत्रों के व्यक्ति उनसे स्नेह रखते थे। सपाट बयानी के साथ वे धाराप्रवाह, ओजस्वी भाषण देने की कला में निष्णात थे।

शिवजी से मेरा परिचय सर्वप्रथम डबोक चौराहे पर 1962 में हुआ। वे मेड़ता गांव में अध्यापक थे और मैं डबोक में अस्थायी शिक्षक नियुक्त हुआ था। मेड़ता में एक वीरवाल वृद्धा को सांप ने काट लिया। ग्रामवासी अन्तिम यात्रा की तैयारी कर रहे थे कि शिवजी उस वृद्धा को खाट पर लिटाकर ट्रक से उदयपुर हॉस्पिटल लाए और डॉ. रामावतार शर्मा के प्रयासों से वह भली चंगी हो गई। इस छोटी सी घटना ने उस क्षेत्र में शिवजी की प्रतिष्ठा बढ़ा दी। शिवजी मेरे विवाह में सम्मिलित हुए थे और 2007 में मेरे पुत्र के विवाह में भी अनेक प्रतिष्ठित आमंत्रण छोड़कर सम्मिलिए हुए।

श्रीनाथजी की हवेली, उदयपुर में वे अपने बहिन-बहनोईजी के साथ किराये के कमरे में रहते थे। वाहन के नाम पर उनके पास साइकिल थी। बाद में शिक्षकों व कर्मचारी साथियों ने एक सम्मान समारोह के पश्चात उन्हें राजदूत मोटर साइकिल भेंट की। इससे उन्होंने राजस्थान, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा आदि नाप लिया।

मित्रों के लिए उनका घर हमेशा खुला मिलता। डॉ. के. एस. गुप्ता, जी. वी. दामले, नन्द चतुर्वेदी, डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. नवलकिशोर, किशन दाधीच, डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर, डॉ. शान्ति भारद्वाज, डॉ. भगवतीलाल व्यास आदि मिलते ही गप्प गोष्ठी शुरू हो जाती।

एक दिन नन्द बाबू और मैं पान की दुकान पर खड़े थे कि इतने में शिवजी और डॉ. भानावत आते दिखे। मैंने नन्दबाबू से कहा- दोनों की क्या जोड़ी बनी है। इस पर हंसते हुए शिवजी बोले- कद छोटा है तो क्या हुआ, मन तो बड़ा है। इस पर जोर का ठहाका गूंज गया।

एकबार शिवजी डॉ. ओमानंद सरस्वती के गंभीर बीमार होने पर रात्रि में ऑटोरिक्शा से जनरल अस्पताल पहुंचे। चिकित्सकों से चर्चा कर पुख्ता इलाज करवाया। डॉ. ओमानंदजी अंत तक कहते रहे कि शिवजी के कारण उन्हें पुनर्जीवन मिला। उदयपुर के बाहर के साथियों में डॉ. हेतु भारद्वाज, डॉ. मनोहर प्रभाकर, डॉ. ताराप्रकाश जोशी, डॉ. दयाकृष्ण विजय, डॉ. दिवाकर शर्मा, डॉ. राधेश्याम शर्मा से उनका नजदीकी याराना रहा।

शिवजी 1990 व 1993 में विधायक निर्वाचित हुए। यूआईटी उदयपुर के अध्यक्ष बनाये गए। मुझे भी ट्रस्टी बनाया। वे कर्मचारी व शिक्षकों के आन्दोलनों में 1966 से 1987 तक अग्रणी रहे। जेल गए व नेतृत्व किया। हमने उदयपुर चिन्तन का प्रकाशन किया। शिवजी का जीवन सीधा, सरल, सादा व निष्कपट था। मित्रों के मित्र शिवजी 18 मार्च 2019 को अनंत यात्रा पर प्रस्थान कर गए।

पूरा राजस्थान अपराधों के जंजाल में : कटारिया

उदयपुर। आज पूरे राजस्थान में पिछले दो माह में अपराधों का आंकड़ा बढ़ा है और मुख्यमंत्री एवं गृहमंत्री अपने कानों में तेल डाल कर सोए हुए हैं। यह बात 23 मार्च

को भाजपा के मीडिया सेंटर पर आयोजित प्रेसवार्ता में नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया ने कही।

उन्होंने कहा कि इस सरकार में न तो कोई मोनिटरिंग है और न कोई जिम्मेदार व्यक्ति जो इसका कुशल संचालन कर सके। पिछले दो माह में कानून व्यवस्था गड़बड़ा गई है। सभी प्रकार के अपराधों में घोर वृद्धि हुई है। एक ही दिन के समाचार पत्रों की कटिंग पेश करते हुए कटारिया ने कहा कि सांचोर पुलिस थाने में तैनात गीता विश्नोई महिला कास्टेबल को मानसिक रूप से प्रताड़ित कर आत्महत्या करने पर विवश करने, भरतपुर में बिजली का बिल जमा न होने पर कुम्बेहर थाने का कनेक्शन कटा तो पुलिस ने अभियंता के साथ मारपीट की और थाने में बंद कर दिया। वहीं हाईवे पर पुलिसकर्मी अवैध वसूली करते हुए पकड़े गये। बारां में हर नावदाशाहजी थाना परिसर में थाना प्रभारी के आवास से दो लाख रूपये एफआर लगाने के एवज में एडवांस राशि बरामद हुई जिसका सौदा 20 लाख रूपये में हुआ।

उन्होंने बताया कि उदयपुर शहर में आये दिन हो रही हत्याएं एवं जानलेवा हमलों में प्रयुक्त अवैध हथियार पर पुलिस मूकदर्शक बनी हुई है। राज्य के बाहर से हथियार सप्लाई की हो रही है जिसमें प्रमुख थाना अम्बामाता, सूरजपोल, घंटाघर है। आदिवासी युवतियों को शादी का झांसा देकर बड़े पैमाने पर खरीद फरोख्त जारी है। होली के दिन हरिजन युवक की हत्या में कांग्रेस की पूर्व पार्षद काजल आदिवाल को गिरफ्तार न करके केस को कमजोर करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रेसवार्ता में ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, रवीन्द्र श्रीमाली, गजेन्द्र भण्डारी एवं मिडिया प्रभारी चंचल अग्रवाल भी उपस्थित थे।

आईसीआईसीआई बैंक द्वारा दो नई सुविधाओं की घोषणा

उदयपुर। तत्काल होम लोन को संभव बनाने के लिए आईसीआईसीआई बैंक ने दो नई सुविधाएं शुरू करने की घोषणा की। पहली सुविधा ग्राहकों को नए होम लोन के लिए तुरंत अंतिम स्वीकृति पत्र प्राप्त करने में सक्षम बनाती है, जबकि दूसरी सेवा मौजूदा ग्राहकों को टॉप-अप लोन लेने की अनुमति देती है और ग्राहक पूरी तरह से डिजिटल तरीके से अपने खाते में धन प्राप्त करते हैं। आईसीआईसीआई बैंक के कार्यकारी निदेशक अनूप बागची ने कहा कि पहली सेवा को 'इंस्टेंट होम लोन' नाम दिया गया है जो बैंक के पूर्व-स्वीकृत वेतनभोगी लाखों ग्राहकों के लिए 30 साल के कार्यकाल पर (ग्राहक की आयु के आधार पर) 1 करोड़ रुपए तक के ऋण के लिए बैंक की इंटरनेट बैंकिंग सुविधा का उपयोग करते हुए तुरंत अंतिम स्वीकृति पत्र प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। यह सुविधा ग्राहकों की सहूलियत में काफी सुधार करती है। दूसरी पहल, 'इंस्टा टॉप अप लोन' बैंक के मौजूदा होम लोन ग्राहकों को 10 साल तक के कार्यकाल के लिए 20 लाख रुपए तक के ऋण पर तुरंत टॉप अप करने की सुविधा देती है। यह सुविधा ग्राहकों को उनके खाते में तुरंत टॉप अप की गई राशि प्राप्त करने में मदद करती है।

केसर से केसरियानाथ की पूजा

ऋषभदेव केसर चढ़ने के कारण जैनियों के प्रथम तीर्थंकर के रूप में केसरियानाथ ही हो गए हैं। काले पत्थर की मूरत होने के कारण आदिवासियों में कालिया बाबा और धुलेवा गांव में बसे होने से धुलेवा धणी के नाम से प्रसिद्धि लिये हैं।

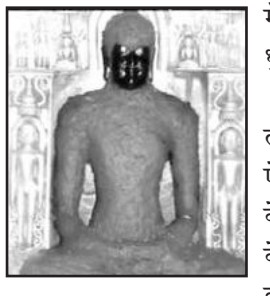

महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वर्ष भर में करीब 80 लाख रूपये तक की इनके केसर चढ़ाई जाती है। ऐसे श्रद्धालु भी आते हैं जो दस-दस किलो की केसर चढ़ाते हैं। मन्नत वाले कभी-कभी नवजात के वजन के बराबर केसर चढ़ाते देखे गए। केसर को पानी में मिलाकर चन्दन के घोटे से घोट-घिसकर जो उबटन तैयार किया जाता है उसके लेप की बड़ी कलात्मक आंगी पूरे शरीर पर की जाती है। शीतला सप्तमी को उनके जन्मोत्सव पर मेला भरता है। पेड़ बचाये रखने के लिए आदिवासी काले बाबा की केसर ले जाकर उसका घोल छांटते हैं। इन दिनों केसर का भा 200 रूपया प्रतिग्राम है।

जमरा खांडोत्सव

होली के दूसरे दिन द्वितीया अर्थात् बीज को जमरा बीज का उत्सव मनाया जाता है। इस दिन रात्रि को महिलाएं मिलकर होली थड़े एकट्ठी होती हैं और विविध मिष्ठान्नों से पूजा करती हैं। इस दौरान होली के डांडे

पर तली हुए खाजे-पापड़ी रख मूसल अथवा हमाम दस्ते से उन्हें कूटती हैं। इसे जमरा खांडना कहते हैं। इस अवसर पर केवल और केवल महिलाएं ही होती हैं। कोई भी पुरुष वहां आने की हिम्मत नहीं करता है। मूसल और दस्ते की भी विधिवत लच्छा तथा कुंमकुंम की टिपकियों से पूजा की जाती है। इस अवसर पर नामा प्रकार के श्लील विहीन गीतों की गंगा बहा देती हैं। मूसल और दस्ता पुरुष योनी के प्रतीक रूप में योनी रूप होली स्थल को खांडते-कूटते हैं और अन्त में होली डांडा उखाड़ कर प्रतिनिधि महिला अपने कंधे पर रख जुलूस रूप में जल-विसर्जित कर देती है।

-फोटो एवं विवरण राजेन्द्र हिलोरिया

एमपी रंजन डिजाइन इंस्टिट्यूट की शुरुआत

उदयपुर। जेके लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी (जेकेएलयू), ने जयपुर में एक नए स्टेट-ऑफ-द-आर्ट डिजाइन सेंटर का उद्घाटन किया था। नया सेंटर एमपी रंजन-जेकेएलयू डिजाइन रिसोर्स सेंटर, इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन का एक हिस्सा है।

सेन्टर का उद्घाटन राजस्थान सरकार के उद्योग एव राज्य उद्यमिता मंत्री प्रसादीलाल मीणा ने किया। इस अवसर पर प्रसादीलाल मीणा ने कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि इस नए सेंटर की शुरुआत के साथ राजस्थान वैश्विक स्तर के डिजाइनर्स के लिए वन-स्टॉप हब बनकर उभरेगा। डिजाइन के क्षेत्र की जानी-मानी हस्ती प्रो. एमपी रंजन के नाम पर खुले इस सेंटर का उद्घाटन करते हुए मुझे बेहद गर्व का एहसास हो रहा है।

जेके लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी के इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन के डीन प्रो. ए. बालासुब्रमनियम ने कहा कि प्रो. रंजन सर्वोत्कृष्ट शिक्षक थे। सीखने और सिखाने के लिए उनका उत्साह अतुलनीय था। वह अपने द्वारा अर्जित ज्ञान को अन्य लोगों तक पहुंचाने के लिए हमेशा उत्साहित रहते थे। उनकी रुचियाँ किसी एक विषय तक सीमित नहीं थी। बात चाहे ज्यामिति की हो अथवा बास्केट बुनाई की, न्याय के तर्कशास्त्र की हो अथवा सूचना तकनीकी की, सभी विषयों पर उनकी पकड़ बेहद सशक्त थी। उनके सम्मान स्वरूप हमने इस केंद्र को 'एमपी रंजन-जेकेएलयू डिजाइन रिसोर्स

गणगौर घाट पर गणगौरों का जमावड़ा

उदयपुर के पीछोला तालाब का गणगौर घाट पहले राजघाट के नाम से जाना जाता था परन्तु इस घाट पर गणगौर बिठाई जाने के कारण इसका यह नाम पड़ गया। यह घाट न केवल राजगणगौर अपितु सभी जाति की गणगौरों के लिए है। सबके अलग-अलग स्थान नियत हैं। महाराणा की ओर से प्रत्येक गणगौर को प्रसाद तथा रूपया-नारियल चढ़ाया जाता। अम्बामाता के नाम की भी एक गणगौर निकलती जो सत्तापोल तक लाई जाती। महाराणा नाव की सवारी से इस गणगौर के दरसण करते और दस्तूर माफिक भेंट-पूजा चढ़वाते।

काठ की गणगौर के साथ-साथ महलों में माटी की बनी गणगौर भी पूजी जाती। माटी की गणगौर-ईसर की जुड़वा मूर्ति मोती चौहट्टे के चतारे के वहां से लाई जाती। पानी में यही मूर्ति पधराई जाती। इसके बाद एक मूर्ति और मंगवाई जाती जिसकी धींगा गणगौर तक पूजा की जाती और अन्त में उसे भी पानी में विसर्जित कर दी जाती। मोती चौहट्टा का वह चतारा-घर आज भी अपने पारम्परिक रूप में गणगौर की माटी की मूर्तियां बनाता है जहां से गणगौर-महिलायें इन्हें खरीद कर ले जाती हैं।

कलाकार तुलाराम ने बताया कि गणगौर के दिनों में महाराणी साहिबा भी गणगौर की ही तरह पोशाक धारण करतीं। नाव की सवारी पर प्रतिदिन जो विविध रंगी पोशाकें राजमहल से सम्बन्धित सभी व्यक्ति पहनते तो अन्दर जनानखाना में भी रानीजी और उनकी समस्त दासियां-बाइयां भी वही रंग लिए होतीं। यह सारी पोशाक गणगौर, घूमर तथा नाव की सवारी के विविध चितराम लिए होती। प्रत्येक चित्र पर जरी का बहुमूल्य काम करवाया जाता। विविध रंगी गणगौर की ऐसी बेशकीमती कसूमल, हरी, पीली, गुलाबी तथा भूपालशाही साड़ियां उदयपुर के गोवर्धनलालजी पटवा के मार्फत मोतीवाला तथा चौकीवाला बोहरों द्वारा बनवाई जातीं।

होलिका के मरने की खबर चारों ओर फैल गई। हिरण्यकश्यप का जीना दूभर हो गया। उधर होली के पति ईसर ने चढ़ाई कर दी। हिरण्यकश्यप घबराया। मंत्री, ज्योतिषी, तांत्रिक इकट्ठे हुए। सबने अपनी-अपनी अटकलों से होलिका को जीवित करने का भरकस प्रयत्न किया पर यह कार्य हुआ बालिकाओं द्वारा जिन्होंने होली की राख के पिण्ड बनाकर अपने गीत-मंत्रों से उनकी पूजा प्रारम्भ कर दी। कहते हैं कि सातवें दिन से ही लड़कियों को यह लगा कि पिण्डों में प्राण पड़ने शुरू हो गए हैं। इधर लड़कियों के घरों में धन-धान्य, सुख-आनंद की बढ़ोतरी होनी प्रारम्भ हो गई तो स्वाभाविक था उनकी माताएं भी उनके अनुष्ठान के साथ अधिक श्रद्धा-आस्था के साथ जुड़ गई। पन्द्रहवें दिन पूजा करने वाली एक षोडशी को स्वप्न दिया कि तुम मुझे एक काठ-प्रतिमा बनाकर उसे अच्छे वस्त्र-आभूषणों से अलंकृत कर देना। मैं गौरा के रूप में उसी में जीवित हो उठूंगी।

गणगौर के लिए 32 फर, 16 मीठे तथा 16 चरके बनाये जाते हैं जो उसकी पूजा थाली में रखे जाते हैं। गणगौर स्थान पर जब महिलाएं पूजा करने जाती हैं तब सौलह तो गणगौर के चढ़ा देती हैं, शेष सौलह का एक-दूसरी आपस में अदला-बदली करती हैं। पूजा की थाली में मेहंदी, लच्छा, कंकू के साथ-साथ हल्दी मिले गेहूं-आटे के गणगौर माता के आभूषण बड़े कलात्मक और विशेष दक्षता-कारीगरी लिए होते हैं।

यद्यपि ये जेवर आटे के होते हैं परन्तु इनका रूप-नक्श भी असली जेवरों से

मिलता-जुलता ही होता है। बोर बनायेंगे तो उसके नाका करेंगे। उस नाके में लच्छा डालेंगे। बोर के ऊपर आटे की बारीक-बारीक बुंदकियां लगाई जायेंगी। इसी प्रकार यदि रखड़ी बनेगी तो वैसी की वैसी रखड़ी बनाई जायेगी। तेड़ियां, बजंटी, बींटी, चूड़ी, कड़े, नेवरियां, आइलें, पाइलें, टणके सब आभूषण बनाये जायेंगे। किसी तरह की कोई खामी नहीं रखी जायेगी। पायलों के नीचे आटे की ही छोटी-छोटी घूघरियां बनाई जायेंगी और घास की पतली तिली से उन पर बेलें तथा दूसरी डिजाइनें निकाली जायेंगी।

वैसाख कृष्णा तृतीया को गणगौर का एक और त्यौहार मनाया जाता है जो 'धींगा गणगौर' के नाम से जाना जाता है। कहते हैं कि इसे उदयपुर के महाराणा राजसिंह ने अपनी छोटी रानी को राजी रखने के लिए प्रारम्भ किया। धींगाई इधर जबर्दस्ती को कहते हैं। रानी की जिद्द-जबर्दस्ती से प्रारम्भ करने के कारण ही इसका नाम धींगा गणगौर पड़ा। राजस्थान के विविध अंचलों में यह त्यौहार भिन्न-भिन्न रूप से मनाया जाता है। कहीं सवारी का आयोजन होता है, कहीं मेले आयोजित होते हैं तो कहीं-कहीं महिलाओं द्वारा इस दिन विचित्र प्रकार के स्वांग भी धारण किये जाते हैं। इसके पीछे लोककथाएं भी कुछ प्रचलित हैं।

शीतला अष्टमी से लड़कियां अपने सिर पर कुम्हार से लाई मिट्टी की मटकी लिए घर-घर घूमती हैं जिसे घुड़ला फिराना अथवा घुड़ला घुमाना कहते हैं। यह मटकी चारों तरफ छेद लिये होती है जिसमें दीपक जला दिया जाता है। 'घुड़लो घूमेला जी घूमेला' गीत पर जब लड़कियां नाचती हैं तो रात्रि में यह घुड़ला टिमटिमाते प्रकाश में बड़ा ही सुहावना लगता है। इस घुड़ले के पीछे भी एक ऐतिहासिक प्रवाद छिपा हुआ है। इसे डॉ. कन्हैयालाल सहल ने इन शब्दों में व्यक्त किया है-

चैत के महीने में मारवाड़ में घुड़ले का मेला भरता है। कहा जाता है कि वि. सं. 1548 में अजमेर में मल्लूखां ने मेड़ता पर चढ़ाई की। वह पीपाड़ के पास कोसाना ग्राम में गौरी पूजा के लिए आई हुई 141 स्त्रियों को ले भागा। इसकी सूचना जब जोधपुर के राव सातलजी को लगी तो उन्होंने तत्काल पीछा किया। उक्त स्त्रियों को तो वे छुड़ा ही लाये किन्तु साथ ही अमीर घराने की कुछ अन्य स्त्रियों को भी ले आए जिसमें घुड़लाखां की एक सुन्दर कन्या भी थी। प्रवाद प्रचलित है कि घुड़लाखां ने इस अपमान का बदला लेने के लिए वीरतापूर्वक युद्ध किया किन्तु तीरों से छिदकर उसे अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। घुड़लेखां की याद में उसकी लड़की ने घुड़ले का त्यौहार प्रचलित किया जिसमें बालिकाएं छिद्रों वाले घड़ों को सिर पर रखकर अपने सम्बन्धियों के यहां गीत गाती हुई जाती हैं। घुड़ले का गीत इस प्रकार है-

घुड़लो घूमेला जी घूमेला।
घुड़ले रे बांध्यो सूत,
घुड़लो घूमेला जी घूमेला।।
प्रतापजी रे जायो पूत,
घुड़लो घूमेला जी घूमेला।
सवागण बारे आव,
घुड़लो घूमेला जी घूमेला।।
मोत्यां रा आखा लाव,
घुड़लो घूमेला जी घूमेला।
पिवजी रो पीलो लाव,
घुड़लो घूमेला जी घूमेला।।

गणगौर विसर्जन के दिन अन्त:पुर में गौरी के सम्मुख राज-परिवार की महिलाएं पूजा के साथ लाखा-फूलाणी गीत गाती हैं। इसकी कुछ पंक्तियां द्रष्टव्य हैं-

थारी तो गलियां में लाखो सांचरियो ए उमा
घर-घर घालिया हिंगलाट
ए लाखो फूलाणी सुन्दर लेरियो ए उमा
थां छोटा लाखोजी मोटा चोवटिया ए उमा
म्हारी छोटी गेंद गुलाल
ए लाखो फूलाणी सुन्दर लेरियो ए उमा

लाखा-फूलाणी के साथ-साथ नथमल नामक गीत भी गाया जाता है पर इसके सम्बन्ध में कोई इतिवृत्ति नहीं मिलती। रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत ने इस गीत की कुछ पंक्तियां इस प्रकार दी हैं-

नथमलजी रो सेरियो सांकड़ो ओ नथमल
न्हीं मावे म्हारी सहेलियां रो साथ
ओ काजल ज्यूं घुल जाऊं थारै नैण
नथमलजी रो ढोलियो सांकड़ो ओ नथमल
न्हीं मावे म्हारा घाघरिया रो घेर
ओ मेहंदी ज्यूं रच जावूं थारे सैण।

विसर्जन के दिन गींदोली तो लगभग सारे ही राजस्थान में गाई जाती है।

रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत ने इसकी कथा इस प्रकार दी है- अहमदाबाद के बादशाह मेहमद बेग की कन्या गींदोली को महुवा के कुंवर जगमालजी लाये थे। जगमालजी की अनुपस्थिति में महुवा की तीज खेलती 140 कन्याओं को पाटण का सूबेदार हाथीखान पकड़ कर ले गया। जगमालजी को लौटने पर यह पता चला तो वे क्रोध और अपमान से जल उठे। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक इसका बदला नहीं लेंगे वे हजामत नहीं बनायेंगे, धुले कपड़ नहीं पहनेंगे और सिर पर पगड़ी नहीं बांधेंगे।

हाथीखान ने उन लड़कियों को अहमदाबाद के बादशाह को भेंट कर दिया था। गणगौर के पहले दिन अहमदाबाद के बादशाह की बेटी भी गणगौर देखने शहर के बाहर आई थी। जगमालजी के प्रधान भोपजी हूल कुछ सवारों के साथ एकदम टूट पड़े और गींदोली को उठाकर घोड़ा दौड़ा दिया। गींदोली को लेकर महुवे पहुंचे तो उस समय गणगौर को विसर्जित कर जगमालजी की सवारी लौट रही थी। भोपजी ने गींदोली जगमालजी को दी। जगमालजी को हर्ष का पार नहीं रहा। उन्होंने सम्मान के साथ गींदोली को आगे किया और वे पीछे हुए। गणगौर के साथ गई हुई स्त्रियों ने उल्लसित हो गींदोली को बधाई दी और इन दोनों की सवारी निकाल साथ में गाती हुई चलीं-

आगे-आगे गींदोलड़ी
पीछे ए जगमाल कंवर
धीरा रो ए जगमाल कंवर
म्हारो छैल रूस्यो जाय।

तब से लगभग 600 वर्षों से महुवे से पकड़कर ले जाई गई 140 कन्याओं के बदले में गींदोली की स्मृति को राजस्थान की महिलाएं प्रतिवर्ष गाकर ताजा कर देती हैं।

जावद एक बड़ी जागीरदारी थी। वहां की गौर की प्रतिमा सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध थी। झाला रावत को अपनी भोजाई की बात चुभ गई। घोड़े पर सवार हो हाथ में भाला ले जावद जा पहुंचा। गणगौर की सवारी निकली। झाला रावत ने गजब की हिम्मत की। भरी सवारी में अपने भाले पर मूर्ति को उठा लिया। भाले पर मूर्ति टांगे और सरपट घोड़ा दौड़ता बरजाल आ गया। बरजाल जावद से दूर और विकट पहाड़ियों के बीच में बसा है।

इस कारण जावद वाले पता ही नहीं लगा सके कि कौन आया और कौन ले गया। झाला ने जावद की गणगौर ला अपनी भाभी को दी। रावतों के यहां बड़े सम्मान से इसकी पूजा हुई। अब भी रावतों के तथा आसपास में स्त्री के लिए 'फलाणी तो जावद री गणगौर व्हियां बैठी है' कहावत प्रयुक्त की जाती है। कालान्तर में वही प्रतिमा देवगढ़ ठिकाने में रावलों के यहां से ले आये।

- प्रस्तुति डॉ. कहानी भानावत

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।